राजस्थान संस्कृत अकादमी

रुद्राभिषेक कार्यक्रम

- रुद्राभिषेक कार्यक्रम के लिए कर्मकांड की प्रक्रिया निर्धारित चरणों में ही होगी और वह **संलग्नक संख्या- 1** के अनुरूप होगी। किसी अस्पष्टता की स्थिति में आचार्यगण संयोजक से संपर्क कर लें।
- रुद्राभिषेक के लिए नियुक्त समस्त वेदपाठी आचार्यों के लिए उनका परिधान भी निर्धारित होगा। उन्हें सफेद धोती-उत्तरीय धारण करना होगा और गले में रूद्राक्ष की माला धारण किए हुए होना होगा। अकादमी की ओर से उन्हें पृथक से दुपट्टे दिए जा रहे हैं, जो उन्हें पूजन अवधि में धारण किए रहने होगा।
- रुद्राभिषेक कार्यक्रम में प्रयुक्त होने वाली पूजन सामग्री **संलग्नक संख्या-2** के अनुरूप होगी। उचित होगा कि यह सामग्री पहले से क्रय कर ली जाये। ताजी चीजों के लिए उस दिन व्यवस्था हेतु उचित व्यक्ति को दायित्व सौंप दिया जाए। यदि इसमें कोई वस्तु अपेक्षित हो तो स्वयं के स्तर पर विवेक सम्मत निर्णय लेकर सामग्री की व्यवस्था कर ली जावे। समस्त सामग्री को थाल में व्यवस्थित रूप में सुंदर वस्त्र बिछाकर रखी जाये।
- कार्यक्रम से पूर्व मंदिर में सभी चीजें व्यवस्थित रूप में संपादित कर ली जाए। इसमें मंदिर की सफाई , शृंगार, अल्पना, रंगोली, तोरण द्वार सज्जा आदि पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। पूजन सामग्री को भी वहां सुरुचिपूर्ण एवं व्यवस्थित रूप में प्रदर्शित किया जाए।
- पूजन विधान में विधि -विधान के अनुसार नवग्रह आदि बनाये जाए। समुचित रूप में घटस्थापन किया जाए। उन पर मांगलिक प्रतीक भी सुरुचिपूर्ण एवं व्यवस्थित रूप में बनाए जाए। यजमान को सामग्री देने हेतु समुचित व्यक्ति को दायित्व पहले से दे दिया जाए।
- जलाभिषेक में गणमान्य अतिथि , दानदाताओं, जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण को यजमान के रूप में रखा जा सकता है। जनसामान्य के जलाभिषेक हेतु समय एवं सुविधा का ध्यान रखें।
- रुद्राभिषेक के लिए जो कलश से जल अभिषेक की प्रक्रिया होगी, वह सहस्रधार होगी।
- यदि तांबे या पीतल की जलाधारी उपलब्ध हो , तो ठीक, अन्यथा मिट्टी की सहस्रधार छिद्र की जलाधारी भी काम में ली जा सकती है।
- जलाभिषेक हेतु गंगाजल/कैलाश मानसरोवर का जल भी शीशी में प्रेषित किया जा रहा है , जिसे अभिषेक में प्रयुक्त किया जा सकता है।
- रुद्राभिषेक एवं पूजन के लिए निम्न संदर्भ पुस्तकें मान्य होंगी-
    - नित्यकर्म पूजा प्रकाश (गीताप्रेस)
    - रुद्राष्टाध्यायी (गीताप्रेस)
- रुद्राभिषेक कार्यक्रम में प्रयुक्त संकल्प वाचन **संलग्नक संख्या-3** के अनुरूप होगा।

- मंत्रोच्चार में शुद्धता एवं पाठ विधि का पूर्ण ध्यान रखा जाए। समस्त वेदपाठी विद्वान आचार्य के नेतृत्व में सस्वर पाठ करेंगे।
- कार्यक्रम के प्रत्येक स्तर शुचिता और पवित्रता का पूर्ण ध्यान रखा जाए।
- कार्यक्रम में वेदपाठीजन एवं यजमानों की व्यवस्था इस प्रकार की जाए कि जनसामान्य को अपने जलाभिषेक में व्यवधान न आए।
- कार्यक्रम के उपरांत प्रशस्ति पत्र वितरण एवं मानदेय वितरण की समुचित व्यवस्था की जाए। इस हेतु पृथक से प्रपत्र प्रेषित किए जा रहे हैं।

● रुद्राभिषेक पूजन पद्धति

संलग्नक संख्या- 1

पूजन समय:- प्रातः 11.00 से सायं 5.00 तक

- पवित्रकरण/दीपक प्रज्वलन
- गुरु-गणपति स्मरण
- प्रधान संकल्प
- दिग्रक्षण
- कलश स्थापना/पूजन
- पूजा-संभार प्रोक्षण
- दीपक पूजन
- शंख-घंटा पूजन
- गणपति पूजन प्रारंभ-
  स्वस्ति पुण्याहवाचन)
  आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन स्नान, पंचामृत स्नान, वस्त्र, उवपस्त्र, यज्ञोपवीत गंध, कुंकुम, चावल, पुष्प-माला, सौभाग्य द्रव्य, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, दक्षिणा)
- पूजनोपरांत स्वस्ति पुण्याहवाचन
- शिव परिवार पूजन (गौरी, गणपति, कार्तिकेय)
- शिव पूजन/न्यास
- **अभिषेक प्रारम्भ**
- अभिषेक निवृत्ति के बाद श्रृंगार एवं पूजन
- वस्त्र (महादेव के धोती, अंगोछा आदि)
  यज्ञोपवीत, गंध, भस्म, तिल, विभिन्न पुष्पो से श्रृंगार, सौभाग्य-द्रव्य, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल-दक्षिणा,)
- कर्पूर आरती (दीप आरती)
- जल-आरती
- पुष्पाजंलि
- स्वस्ति-आशीर्वाद

-: सहस्रघट अभिषेक व पूजन सामग्री:-

संलग्नक संख्या- 2

क्रसं	सामग्री	न्यूनतम मात्रा	विवरण
1	कुमकुम (रोली)	1 पैकेट	
2	अबीर	1 पैकेट	लाल
3	गुलाल	1 पैकेट	गुलाबी
4	सिंदूर	1 पैकेट	लाल व पीला आवश्यकतानुसार
5	जिल्फू	1 पैकेट	
6	हल्दी	100 ग्राम	आवश्यकतानुसार पिसी हुई और साबुत
7	सरसों	100 ग्राम	
8	सर्वौषधि	100 ग्राम	
9	जौ	250 ग्राम	
10	चावल (अक्षत)	250 ग्राम	बासमती बिना टूटे हुए
11	अगरबत्ती/धूप	5 पैकेट	अलग-अलग गंधों के
12	माचिस	2 पैकेट	
13	**पंचमेवा-**		
14	नारियल गिरी	1	
15	किशमिश	100 ग्राम	
16	बादाम	100 ग्राम	
17	काजू	100 ग्राम	
18	चिरौंजी या अखरोट या पिस्ता	100 ग्राम	
19	शुद्ध जल	आवश्यकतानुसार	
20	दूध	1 लीटर	ताजा गाय का दूध /उपलब्ध न होने पर सरस या अमूल
21	दही	250 ग्राम	ताजा गाय का दूध से बना/उपलब्ध न होने पर सरस या अमूल
22	शहद	250 ग्राम की शीशी	पतंजलि या डाबर
23	मिश्री/शक्कर	500 ग्राम	

24	गाय का घी	500 ग्राम	पतंजलि /सरस या अमूल
25	**5 ऋतु फल -**	5 किलोग्राम	
26	आम	1 किलोग्राम	
27	केला	1 किलोग्राम	
28	सेव	1 किलोग्राम	
29	जामुन	1 किलोग्राम	
30	नारंगी या अन्य कोई फल	1 किलोग्राम	
31	नैवेद्य (मिष्ठान्न) व प्रसाद	1 किलोग्राम	प्रसाद हेतु आवश्यकता या उपलब्धतानुसार
32	पान (कोरे)	10 नग	
33	सुपारी	10 नग, 1 बडी	
34	लौंग	100 ग्राम	
35	छोटी इलायची	100 ग्राम	
36	बरक	आवश्यकतानुसार	
37	काले तिल	250 ग्राम	
38	कपूर	100 ग्राम या 5 पैकेट	
39	गंगाजल	1 शीशी	
40	गुड	250 ग्राम	
41	फूलों की माला	3	
42	फूल	आवश्यकतानुसार	
43	बेलपत्र	10	
44	आक के फूल	10	
45	धतूरा	3	
46	दूब (दूर्वा)	1 मुट्ठी	
47	आसन	1	कुश का
48	रुद्राक्ष माला	1	
49	यज्ञोपवीत	11 नग	
50	धोती	1	सफेद
51	अंगोछा	1	सफेद
52	सफेद वस्त्र (पाटे पर बिछाने हेतु)	1 मीटर	सूती
53	सफेद वस्त्र (भगवान के अंग पोंछने हेतु)	रूमाल या अंगोछा	सूती
54	लाल वस्त्र	1 मीटर	शनील या रेशम का पूजन सामग्री रखने हेतु

55	तांबे का लोटा	1	
56	पत्तल-दौने	50	
57	सप्तधान्य	आवश्यकतानुसार	
58	कुश	आवश्यकतानुसार	
59	पंच पल्लव	आवश्यकतानुसार	
60	नारियल	2	
61	केसर	1 पैकेट	
62	चंदन	1 लकडी का टुकडा	पत्थर पर घिसे जाने हेतु
63	इत्र की शीशी	1	
64	सिंहासन (चौकी, आसन)	1	
65	पंच पात्र	1 सेट	तांबे का
66	जलधारी	1	
67	सहस्र छिद्र वाला धारा पात्र	2	
68	मिट्टी के दीपक	11	
69	मिट्टी का कलश	1	
70	थालियाँ-कटोरयाँ (सामग्री हेतु)	2 सेट	बडी स्टील की
71	बांस की टोकरी	1	
72	भस्म	आवश्यकतानुसार	
73	हवन हेतु समिधा	आवश्यकतानुसार	
74	गाय का गोबर	आवश्यकतानुसार	
75	गाय के गोबर के कंडे	आवश्यकतानुसार	

संकल्प

संलग्नक संख्या-3

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य .....अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकः अहम् ..... राजस्थान सर्वकारजनतजनार्दनस्यश्च प्रतिनिधिभूतोऽहं एतत्प्रान्तीयानां अंगारादिक्रूरसम्मेलनसम्भाव्यदिव्यभौमान्तरिक्षसर्वोपप्लवादि सर्वापत् शान्त्यर्थं आधीनराज्यस्य कुशलक्षेमपूर्वकपूर्णराज्यसुखप्राप्त्यर्थं राज्यकोशे उत्तरोत्तरधनविवर्धनार्थं शक्ति , सामर्थ्यविजयप्राप्तिराज्यस्थैर्यप्रजानुरागप्राप्त्यर्थं राष्ट्रान्तर -आक्रमणादि उपद्रवनिरासार्थं विविधापराधजनितसर्वपापक्षयार्थं अतिवृष्टि , अनावृष्टि, भूकम्प, राष्ट्रविप्लवदुर्भिक्षादिविविधआधिव्याधिविविधकष्ट-निवृत्तिपूर्वकनित्यकल्याणप्राप्त्यर्थं राष्ट्रे सुख-शांति-समृद्धि-सौहार्द-संवृद्धि-स्वास्थ्य-समुल्लास-अभिवृद्धयर्थं, सर्वेषां रोगीणां शरीरे उत्पन्नविविधरोगोपसर्गाणं शीघ्रोपशमनपूर्वकसर्वेषां मनुष्याणां पशुपक्षिणां च कल्याणार्थं भरतभूमेः ललामभूतायाः भारतवर्षभूमेः सर्वविधशस्यवृद्धिपूर्वकवृक्षादीनां फलपुष्पसमृद्धयर्थं सदैव सद्यश्च सुवृष्टिप्राप्त्यर्थं वरुणेन्द्रादिदेवानां प्रीत्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं च धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धयर्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वक-धर्मसंस्थापनार्थं जगत्कल्याणभावनया श्रीत्रिपुरारित्रिपुरेश्वरी प्रीतये द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः इति श्रुत्यानुसारसदुद्देश्यद्वारा आगामनिगम प्रतिपादितश्रेष्ठतमफलप्राप्त्यर्थं रुद्रसंख्याकैः(11) ब्राह्मणैः द्वारा अस्मिन् शिवोपरि रुद्राभिषेकाख्यं सहस्रघटाभिषेकाख्यं वा कर्म अहं कारयिष्ये।